बाल-उत्सव

''विशेष''

(14–15 अगस्त, 1994)

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

(क) आमुख 1-17
(ख) साँसारिकधन 19-35
(ग) गृहस्थ आश्रम 37-56
(घ) परमार्थी धन (भक्ति) 57-135
(ङ) सच्चे पातशाह जी द्वारा पढ़ाई का समझौता 137-156
(च) विशेष 157-176

सतवस्तु के वाली श्री साजन जी ने कलयुग के स्वभावों से पीड़ित सजनों को सुखी और शांतिमय जीवन जीने के लिए सतवस्तु का कुदरती शास्त्र अपने जीवन चरित्र के रूप में दिया, ताकि इस द्वारा दर्शाये मार्ग का अनुसरण कर सजन इस जीवन की हकीकत को समझ, इसी जन्म में अपने ज्योति स्वरूप को जो अपना आप है उसकी पहचान कर सके और रोशन हो जाये।

श्री साजन जी के इस जीवनोपयोगी महत्व को सजन समझ नही सके और कलयुग के प्रभाव से ग्रसित हो, अपने आप को संकल्पो विकल्पों में उलझा बैठे हैं, जिसने सजनों के गृहस्थ आश्रम, विशेषकर बच्चों को प्रभावित किया। परिणामस्वरूप सजनो के जीवन में केवल झुखना ही झुखना और रोना ही रोना हो गया। ऐसे में युवा बच्चों, नवदम्पतियों, एवम् सजनों को उचित मार्ग दर्शन की आवश्यकता हुई।

इन सभी उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए सजन शहनशाह महाबीर जी के द्वारे पर "विशेष बाल उत्सव" का आयोजन किया गया, जिसमें आयु विशेष का कोई बन्धन न था और जिसमें सभी सजन 'श्री साजन जी" के बाल बन कर सम्मलित हुए।

सजनों जब कि कलुकाल के बादल छट रहे हैं और सतवस्तु का सूर्य उदित है यह बाल उत्सव एक खुला आवाहन है, हम सब सजनों के लिए, कि आओ, शास्त्र द्वारा दर्शाये मार्ग का अनुकरण करें और अपने आप को आने वाले युग का अभिवादन करने योग्य बना सकें।

Request for this book

Email
info@satyugdarshantrust.org